स्कूल पुस्तकालय को प्रभावी बनाने की तरकीबें

कमलेश चन्द्र जोशी

स्कूल में पुस्तकालय होना ज़रूरी है लेकिन उससे ज़्यादा ज़रूरी है उस पुस्तकालय का प्रभावी संचालन। जब शिक्षकों ने पुस्तकालय को विद्यार्थियों के लिखने-पढ़ने से जोड़ा तथा उसके सूत्र कक्षा शिक्षण से जोड़े और बतौर शिक्षक ख़ुद भी उन प्रक्रियाओं से जुड़े तो विद्यार्थियों के सीखने में सकारात्मक बदलाव दिखा।

किसी भी स्कूल पुस्तकालय को देखते समय स्वाभाविक रूप से मन में यह जिज्ञासा रहती है कि यह पुस्तकालय कितने प्रभावी ढंग से काम कर पा रहा है, और इसे कैसे बेहतर बनाया जा सकता है? इसे समझने के कई व्यवस्थागत व अकादमिक पहलू होते हैं। मसलन, पुस्तकालय में कितनी और किस तरह की किताबें हैं; कितने विद्यार्थी पुस्तकालय में नियमित रूप से आते हैं; वे किताबों का उपयोग कितना कर पा रहे हैं; पुस्तकालय संचालित करने वाले शिक्षकों का बाल पुस्तकों और उनके उपयोग के प्रति क्या नज़रिया बन रहा है; इत्यादि। इसी के साथ प्रभावी पुस्तकालय की पहचान वहाँ विद्यार्थियों के बीच की जाने गतिविधियों, किताबों की प्रस्तुति, रखरखाव, स्थान की उपलब्धता, आदि से भी होती है। साथ ही, यह भी कि शिक्षक पुस्तकालय के लिए कितना समय निकाल पाते हैं। इन सभी पहलुओं पर चर्चा ज़रूरी है।

कुछ सरकारी स्कूलों के शिक्षक अपने स्कूल पुस्तकालय को बेहतर और प्रभावी बनाने के कार्य में जुटे हैं। ऊधम सिंह नगर, उत्तराखण्ड के शिक्षकों के साथ हुई बातचीत के दौरान उन्होंने अपने पुस्तकालय के बेहतर संचालन, और उसे प्रभावी बनाने के सन्दर्भ में बिन्दुवार कई महत्त्वपूर्ण विचार साझा किए।

शिक्षकों की स्वयं की तैयारी

पुस्तकालय को प्रभावी बनाने के काम में जुटे शिक्षकों ने बताया कि वे अपनी तैयारी के लिए पुस्तकालय विकास से सम्बन्धित सत्रों में भाग लेते हैं, इससे जुड़े विषयों को गहराई से समझने के लिए इन पर आपस में बातचीत करते हैं, और बाल साहित्य व पुस्तकालय के जानकार व्यक्तियों से संवाद करते हैं। इसके अलावा, वे ख़ुद से अच्छा बाल साहित्य और बच्चों की स्तरीय पत्रिकाएँ निरन्तर पढ़ते रहते हैं। इनमें *बस की सैर, नन्हा करमकल्ला, नन्हे मुन्ने गीत, बरास्ता तरबूज़* तथा *ननिहाल में गुज़रे दिन* जैसी किताबें और *चकमक, प्लूटो* तथा *साइकिल* जैसी बाल पत्रिकाएँ शामिल हैं। शिक्षकों के बीच इन पढ़ी गई किताबों की विषयवस्तु, घटनाक्रम, पात्रों, चित्रांकन और इनसे बनने वाले नज़रियों पर गहन बातचीत होती है। शिक्षक यह भी चर्चा करते हैं कि किस कक्षा स्तर के विद्यार्थियों के लिए कैसी व कौन-सी किताबें उपयुक्त होंगी। कुछ शिक्षकों के मन में यह सवाल आज भी कौंधते हैं कि विद्यार्थी पढ़ना कैसे सीखते हैं। उनमें पढ़ने की ललक एवं स्वाध्याय की आदतों का विकास कैसे करें? हम क्या करें कि विद्यार्थी अच्छे पाठक बनें? इस तैयारी के लिए उन्होंने *पढ़ने की समझ, पढ़ने की दहलीज़ पर, बच्चे*

चित्र 1: अपनी-अपनी पसन्द की किताबें पढ़ते, आनन्दित होते विद्यार्थी

की भाषा और अध्यापक और *पढ़ना-लिखना सीखने में किताबों का महत्त्व* जैसी शिक्षक उपयोगी किताबों को पढ़कर सामूहिक विमर्श किया है। उन्होंने 'क्या-क्या हो एक अच्छी किताब में', 'कहानी कहाँ खो गई', और 'किताब पढ़ने की आदत' जैसे कई लेखों को पढ़कर इस दिशा में गहरी समझ बनाने के प्रयास किए हैं। इन सारी तैयारियों से पुस्तकालय के प्रभावी संचालन में काफ़ी मदद मिली, और विद्यार्थियों के साथ कार्य करते हुए एक प्रभावी पुस्तकालय चलाने की दृष्टि भी मिली।

शिक्षकों ने बताया कि इस तरह शिक्षकों के बीच बाल साहित्य को पढ़ने और समझने के लिए माहौल बना है। एक शिक्षक ने बताया कि वे एकलव्य संस्था के 'लाइब्रेरी से दोस्ती' कोर्स से भी जुड़े, और इसके परिणामस्वरूप वे अपने स्कूल में और बेहतर काम कर पा रहे हैं, तथा अपने साथी शिक्षकों को भी बाल साहित्य के उपयोग में मदद कर पा रहे हैं। शिक्षकों ने यह भी बताया कि वे स्कूल व्यवस्था से जुड़े अन्य कार्यों के साथ ही पुस्तकालय को संचालित करने की ज़िम्मेदारी भी निभाते हैं।

चित्र 2 : पाठ्यपुस्तक से कविता, कहानी पढ़कर सुनाते विद्यार्थी

पढ़ने की घण्टी

कई शिक्षकों ने बताया कि उन्होंने अपने स्कूल में एक ऐसा समय निर्धारित कर रखा है जिसमें विद्यार्थियों को पुस्तकालय में आकर पढ़ना है। वे वहाँ आकर अपनी पसन्द की किताब चुन सकते हैं, और बैठकर पढ़ सकते हैं। पढ़ने की घण्टी के दौरान, शिक्षक विद्यार्थियों के पढ़ने का अवलोकन करते रहते हैं और कभी-कभार उनसे बातचीत भी करते हैं। कुछ शिक्षक विद्यार्थियों के साथ बैठकर किताबें भी पढ़ते हैं। (इस पर एक विस्तृत लेख *पाठशाला भीतर और बाहर* के अंक 16, जून 2023 में प्रकाशित हुआ है।)

पुस्तकालय के लिए किताबों का चयन

शिक्षकों ने बताया कि पुस्तकालय को आकर्षक बनाने के लिए नई-नई किताबों की ज़रूरत पड़ती है। वे विद्यार्थी जो ज़्यादातर किताबों को एक से अधिक बार पढ़ चुके होते हैं, उनमें उनकी रुचि कुछ कम हो जाती है, और उन्हें नई किताबें चाहिए ही होती हैं। किन्तु स्कूल पुस्तकालय में किताबों के लिए सीमित बजट आता है। कई बार विभाग द्वारा उपलब्ध कराई गई किताबें प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों के मतलब की नहीं होती हैं। ऐसी स्थिति में शिक्षक अपनी पहल और अपने स्रोतों से भी किताबें मँगवाते हैं। इन किताबों में कहानी व कविताओं के अलावा जानकारी प्रदान करने वाली, अपने परिवेश को समझने वाली किताबें, यात्रा वृत्तान्त, डायरी, रचनात्मक गद्य, माथापच्ची, पहेलियों की किताबें, शब्दकोश, आदि भी शिक्षकों द्वारा मँगवाए गए हैं। इनके साथ, छोटे विद्यार्थियों के लिए बिग बुक, चित्रात्मक किताबें, कविता पोस्टर, आदि मँगवाने का भी ध्यान रखा गया है। कुछ शिक्षकों ने हिन्दी के अलावा अँग्रेज़ी की किताबें भी मँगवाई हैं।

आपसी बातचीत में शिक्षक बाल साहित्य की पराग ऑनर लिस्ट से भी परिचित हुए हैं। वे उस सूची की किताबें भी मँगवा लेते हैं। इसमें सबसे ख़ास अवलोकन यह है कि जिन शिक्षकों को पुस्तकालय से मिली ऊर्जा का एहसास हो जाता है, वे समय-समय पर विद्यार्थियों के लिए किताबें मँगवाते रहते हैं और पुस्तकालय को समृद्ध करते हैं। कुछ शिक्षक किताबों को ख़रीदने के लिए विश्व पुस्तक मेले, आदि का भ्रमण भी करते हैं, और अपने स्कूल के लिए तो किताबें ख़रीदते ही हैं, अपने साथियों के लिए भी किताबें ख़रीदकर लाते हैं।

किताबों को पुस्तकालय में व्यवस्थित करना

शिक्षकों ने बताया कि पुस्तकालय में किताबें कैसे व्यवस्थित व प्रस्तुत की गई हैं, इसका किताबों तक विद्यार्थियों की पहुँच पर असर होता है। किताबें विद्यार्थियों के सामने हों, उनको दिखें, व उनकी पहुँच में हों तब वे ज़्यादा आसानी से चुन सकते हैं। इसके लिए शिक्षक परिस्थिति के अनुसार अलग-अलग तरीक़े इस्तेमाल करते हैं। कई शिक्षकों ने बताया कि उन्होंने विद्यार्थियों को यह भी सिखा दिया है कि किताबें वापस रखना ज़रूरी है, और वह भी उनके सही स्थान पर। विद्यार्थी ऐसा करने भी लगे हैं। कुछ जगह पर विद्यार्थियों ने पुस्तकालय में व्यवस्था जमाने में और पूरे संचालन में भी मुख्य भूमिकाएँ ले ली हैं।

विद्यार्थियों का किताबों से जुड़ाव कैसे बना ?

इस सन्दर्भ में भी शिक्षकों ने कई अनुभव साझा किए। उनका कहना था कि विद्यार्थियों का किताबों से जुड़ाव बने, इसके लिए ज़रूरी है कि किताबें सिर्फ़ पुस्तकालय तक ही सीमित न रहें। इसलिए पुस्तकालय के साथ-साथ कक्षा में भी वे किताबों के साथ कार्य करते हैं। शिक्षकों के साथ बातचीत, और किए गए स्कूल अवलोकन में विद्यार्थियों के किताब के साथ जुड़ाव बनाने के बारे में आए कुछ पहलू आगे प्रस्तुत हैं।

कक्षा में किताबों का उपयोग

शिक्षकों से बातचीत के दौरान यह पता चला कि वे पाठ्यपुस्तकों के पाठों की योजना के साथ पुस्तकालय की किताबों का जुड़ाव बनाकर भी उनका उपयोग करते हैं। उदाहरण के लिए, कक्षा

5 की पाठ्यपुस्तक *रिमझिम* के पाठ 'नन्हा फ़नकार' में राजा अकबर की विनम्रता और उसके आम लोगों से सीखने की बात है तो उस पाठ को पढ़ते हुए *शहंशाह अकबर को कौन सिखाएगा* किताब को पढ़ा, और उसे भी जोड़ा। इसी तरह, कक्षा 2 की पाठ्यपुस्तक में शामिल 'चींटी' कविता के साथ एकलव्य द्वारा प्रकाशित किताब *चींटा* से जोड़कर बातचीत की गई। यह भी देखने को मिला कि उनकी बातचीत में अकसर पाठ्यपुस्तकों के पाठ की चर्चाओं के साथ बाल साहित्य का भी ज़िक्र आ ही जाता था। इसका कारण उनका यह सोचा-समझा प्रयास था कि विद्यार्थियों का बाल साहित्य से जुड़ाव बने, और पाठों को वे थोड़ा व्यापक परिप्रेक्ष्य में देख पाएँ। इससे यह समझ में आ रहा था कि जो किताबें पहले केवल लेन-देन तक सीमित थीं, अब विद्यार्थियों के बीच पढ़ने के मज़े लेने के साथ एक शिक्षण योजना के तहत उपयोग के लिए भी तैयार थीं।

विद्यार्थियों का नियमित अवलोकन व बातचीत

स्कूलों में शिक्षकों ने विद्यार्थियों के साथ किताबों पर ग़ौर करना शुरू किया कि कौन-से विद्यार्थी किताबें ले जा रहे हैं, कौन नहीं। जो किताबें ले जा रहे हैं, वे उन्हें पढ़ रहे हैं या नहीं, यह जानने के लिए शिक्षक उनसे कभी-कभी किताब के सन्दर्भ में बातचीत भी करते। इस प्रक्रिया से शिक्षक यह भी समझ पाए कि किस विद्यार्थी को किस तरह की किताबें पसन्द आती हैं। और तब वह उनको सुझाव भी दे पाते थे कि उन्हें और कौन-सी किताबें पसन्द आ सकती हैं।

किताबों पर आधारित गतिविधियाँ

विद्यार्थियों की किताबों में दिलचस्पी बढ़े, इसके लिए शिक्षकों ने उनके साथ किताबों पर आधारित गतिविधियाँ भी शुरू कीं। ये गतिविधियाँ थीं—शिक्षक द्वारा किताबों को पढ़कर सुनाना; किसी किताब से कहानी चुनकर उस पर विद्यार्थियों से रोल प्ले करवाना; किसी कहानी को कठपुतली का इस्तेमाल कर सुनाना; जो विद्यार्थी कहानी पढ़कर सुना सकते हैं, उनसे अपनी पसन्दीदा किताब की कहानी सुनाने के लिए कहना; आदि।

सबसे महत्त्वपूर्ण बात यह देखने को मिली कि शिक्षकों ने किताबों पर चर्चा के लिए योजना बनानी शुरू की, और उसके अनुसार विद्यार्थियों से बातचीत की शुरुआत की। इसमें *छुटकी उल्ली, मितवा, ख़ुश-ख़ुश कछुआ, नीलोफ़र की मुस्कान, पंछी प्यारा, बुढ़िया की रोटी, महागिरी, क्यूँ-क्यूँ छोरी,* आदि किताबों की योजनाएँ देखने को मिलीं। विद्यार्थियों के लिए किताबों के एक्सपोज़र में यह भी देखने को मिला कि कविता-कहानियों के अलावा शिक्षकों ने माथापच्ची की किताबों या गतिविधियों की किताबों को भी विद्यार्थियों को पढ़ने का मौक़ा दिया।

विद्यार्थियों के पढ़े व लिखे को जगह देना

जैसा कि ऊपर ज़िक्र आया है, विद्यार्थियों ने जो पढ़ा है उसे अभिव्यक्त करने के मौखिक मौक़े शिक्षकों ने उन्हें दिए। इसी के साथ शिक्षकों ने विद्यार्थियों को नई कहानियाँ और कविताएँ बनाने के मौक़े दिए, और उन्हें अपने अनुभवों को लिखने के लिए प्रोत्साहित भी किया। शिक्षकों ने विद्यार्थियों के इन अनुभवों को कुछ बाल पत्रिकाओं को भेजा। उनमें से कुछ विद्यार्थियों के अनुभव प्रकाशित भी हुए। इस कोशिश ने भी उन्हें आगे पढ़ने के लिए प्रेरित किया। कुछ बड़े विद्यार्थियों ने किताबों पर समीक्षाएँ लिखने की भी शुरुआत की।

> **शिक्षकों ने यह पाया कि किताबों के साथ बहुत-से मुद्दों पर बात करने में आसानी रहती है। इनमें जातीय, लैंगिक, भाषाई, क्षेत्रीय भेदभाव से जुड़े मुद्दे शामिल हैं जिन पर हम शायद सीधे बात नहीं कर सकते।**

सारांश

शिक्षकों के साथ बातचीत व स्कूल पुस्तकालय के अवलोकन में यह समझ आया कि पुस्तकालयों का प्रभावी संचालन करने के दौरान शिक्षक यह समझ पाए कि किताबों को पढ़ने का प्रभाव विद्यार्थियों के भाषा विकास पर ही नहीं, बल्कि उनके पूरे व्यक्तित्व पर पड़ता है। उनकी अभिव्यक्ति का विकास तो होता ही है, उनका आत्मविश्वास भी बढ़ता है, और विभिन्न चीज़ों को समझने की उनकी क्षमता का विकास होता है। शिक्षकों ने महसूस किया कि जो विद्यार्थी किताबें पढ़ते हैं उसका प्रभाव अन्य विषयों पर भी पड़ता है, और वे दूसरे विषयों में भी अच्छा प्रदर्शन करते हैं। इसके अलावा, शिक्षकों ने यह भी पाया कि किताबों के साथ बहुत-से मुद्दों पर बात करने में आसानी रहती है। इनमें जातीय, लैंगिक, भाषाई, क्षेत्रीय भेदभाव से जुड़े मुद्दे शामिल हैं जिन पर हम शायद सीधे बात नहीं कर सकते, लेकिन किताबों के माध्यम से बातचीत हो सकती है। उन्हें इस बात का भी एहसास हुआ कि किताबों पर समझ बनाने के लिए अच्छी योजना बनाने की ज़रूरत होगी तभी वे विद्यार्थियों के बीच अच्छी बातचीत करवा सकते हैं। इसके अलावा, यह सब ठीक से करने के लिए उन्हें ख़ुद के लिए अच्छे बाल साहित्य को पढ़ने, और उस पर नियमित रूप से अपनी समझ बनाने की ज़रूरत महसूस होती है।

कमलेश चन्द्र जोशी 30 वर्षों से प्राथमिक शिक्षा के क्षेत्र से जुड़े हुए हैं। प्राथमिक स्तर पर शिक्षकों के साथ भाषा शिक्षण, स्कूल पुस्तकालय, शिक्षक प्रशिक्षण, आदि को लेकर गहराई से काम किया है। वे विगत 16 सालों तक अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन, ऊधम सिंह नगर, उत्तराखण्ड में कार्यरत रहे हैं।

सम्पर्क : kamlesh.joshee@gmail.com